Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

निर्मल वर्मा की कहानियों में मध्यवर्गीय संवेदना : स्वरूप, अंतर्द्वंद्व एवं अभिव्यक्ति

कविता* डॉ. भावना**

* शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत
** शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – हिंदी की नई कहानी के प्रमुख हस्ताक्षरों में निर्मल वर्मा का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उनकी कहानियाँ आधुनिक मनुष्य के आंतरिक जीवन, अकेलेपन, भावनात्मक रिक्तता, संबंधों के विघटन, अस्तित्वगत संकट तथा मध्यवर्गीय जीवन की जटिल संवेदनाओं को सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त करती हैं। निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में मध्यवर्ग केवल आर्थिक स्थिति से निर्धारित कोई सामाजिक वर्ग नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी मानसिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें व्यक्ति परंपरा और आधुनिकता, आकांक्षा और उपलब्धि, स्वतंत्रता और सामाजिक दायित्व तथा आत्मीयता और अलगाव के बीच निरंतर संघर्ष करता रहता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य निर्मल वर्मा की प्रमुख कहानियों के माध्यम से मध्यवर्गीय संवेदना के विविध पक्षों का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में परिंदे, लंदन की एक रात, डेढ़ इंच ऊपर, जलती झाड़ी तथा पिछली गर्मियों में जैसी कहानियों को आधार बनाकर आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की मन:स्थितियों, संबंधगत जटिलताओं, स्मृति, प्रेम, असुरक्षा और अस्तित्वगत अकेलेपन का विवेचन किया गया है। शोध में पाठ-विश्लेषण, मनोवैज्ञानिक व्याख्या तथा सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण का सहारा लिया गया है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि निर्मल वर्मा मध्यवर्गीय जीवन की बाहरी घटनाओं की अपेक्षा उसके भीतर घटित होने वाली सूक्ष्म मानसिक प्रक्रियाओं को अधिक महत्त्व देते हैं। उनकी कहानियाँ आधुनिक मध्यवर्ग की संवेदनात्मक विडंबनाओं का कलात्मक दस्तावेज प्रस्तुत करती हैं।

शब्द कुंजी – निर्मल वर्मा, मध्यवर्गीय संवेदना, नई कहानी, आधुनिकता, अकेलापन, संबंध-विघटन, मनोवैज्ञानिक यथार्थ, अस्तित्व-बोध।

प्रस्तावना – हिंदी कहानी का विकास भारतीय समाज में घटित सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तनों से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। प्रेमचंद के समय में कहानी का केंद्र प्राय: सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, ग्रामीण जीवन, सामंती व्यवस्था तथा सामूहिक संघर्ष हुआ करता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में नए मध्यवर्ग का विस्तार हुआ। शिक्षा, नगरीकरण, रोजगार, उपभोक्तावादी आकांक्षाओं और आधुनिक जीवन-मूल्यों ने व्यक्ति की जीवन-दृष्टि को प्रभावित किया। इस परिवर्तन के साथ साहित्य में मनुष्य की आंतरिक अनुभूतियों, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानसिक तनाव और संबंधों की जटिलताओं को समझने की प्रवृत्ति विकसित हुई। हिंदी में नई कहानी आंदोलन इसी बदलती संवेदना की महत्त्वपूर्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आया।

नई कहानी ने व्यक्ति को केवल सामाजिक परिस्थितियों का निष्क्रिय परिणाम मानने के बजाय उसकी निजी अनुभूतियों, मानसिक द्वंद्वों और अस्तित्वगत प्रश्नों को केंद्र में स्थापित किया। इस प्रवृत्ति में निर्मल वर्मा का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनकी कहानियों में पात्रों का जीवन प्राय: सामान्य दिखाई देता है, किंतु उस सामान्य जीवन के भीतर स्मृतियों, अनकहे दुखों, असफल प्रेम, भावनात्मक दूरी और आत्मपरक संघर्षों की अनेक परतें विद्यमान रहती हैं।

निर्मल वर्मा के यहाँ मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किसी प्रत्यक्ष सामाजिक घोषणापत्र के रूप में नहीं मिलता। वे न तो मध्यवर्ग की केवल आर्थिक समस्याओं का वर्णन करते हैं और न ही उसके जीवन को नैतिक आदर्शों की सरल कसौटी पर परखते हैं। इसके स्थान पर वे उस मनुष्य को चित्रित करते हैं जो आधुनिक जीवन में अनेक सुविधाओं और विकल्पों के बावजूद भावनात्मक रूप से असुरक्षित, संबंधों में अनिश्चित तथा अपने अस्तित्व के प्रति संशयग्रस्त है। उसके पास जीवन जीने के साधन हो सकते हैं, लेकिन जीवन को अर्थ प्रदान करने वाली आत्मीयता और स्थिरता का अभाव भी हो सकता है।

इस संदर्भ में निर्मल वर्मा की कहानियों में मध्यवर्गीय संवेदना का अध्ययन केवल एक सामाजिक वर्ग के चित्रण का अध्ययन नहीं है, बल्कि आधुनिक मनुष्य की मानसिक संरचना, उसकी इच्छाओं, सीमाओं और भावनात्मक संकटों की पड़ताल भी है।

शोध की समस्या, उद्देश्य एवं पद्धति

शोध की समस्या– प्रस्तुत शोध की मूल समस्या यह समझना है कि निर्मल वर्मा की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की संवेदना किन रूपों में व्यक्त होती है तथा आधुनिकता, नगरीय जीवन, पारिवारिक संबंधों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के दबावों से यह संवेदना किस प्रकार प्रभावित होती है। साथ ही यह भी विचारणीय है कि लेखक की कथात्मक शैली, मौन, प्रतीक, स्मृति और वातावरण मध्यवर्गीयमन:स्थितियों की अभिव्यक्ति में क्या भूमिका निभाते हैं।

शोध के उद्देश्य:

1. निर्मल वर्मा की कहानियों में मध्यवर्गीय संवेदना के स्वरूप का विवेचन करना।
2. आधुनिक मध्यवर्ग के अकेलेपन, मानसिक तनाव और अस्तित्वगत संकट का विश्लेषण करना।
3. प्रेम, विवाह, परिवार तथा मानवीय संबंधों में उत्पन्न विघटन और दूरी को समझना।
4. स्मृति, अतीत-बोध और भावनात्मक असुरक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
5. निर्मल वर्मा की कथन-शैली, प्रतीकात्मकता, मौन और मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता का मूल्यांकन करना।
6. नई कहानी आंदोलन के व्यापक संदर्भ में उनके मध्यवर्गीय दृष्टिकोण की प्रासंगिकता स्पष्ट करना।

शोध-पद्धति- यह शोध मुख्यत: गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें निर्मल वर्मा की चयनित कहानियों का निकट पाठ-विश्लेषण किया गया है। साथ ही नई कहानी, आधुनिकता, मध्यवर्गीय जीवन और मनोवैज्ञानिक यथार्थ से संबंधित आलोचनात्मक अवधारणाओं की सहायता ली गई है। कहानियों के कथानक, पात्रों की मानसिक अवस्थाओं, संबंधों, वातावरण और शिल्प का पारस्परिक संबंध स्थापित करते हुए निष्कर्ष विकसित किए गए हैं।

मध्यवर्गीय संवेदना : अवधारणा एवं स्वरूप - मध्यवर्गीय संवेदना को समझने के लिए मध्यवर्ग की सामाजिक स्थिति और उसकी मानसिक संरचना दोनों पर विचार करना आवश्यक है। सामान्यत: मध्यवर्ग समाज के उस हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जो आर्थिक स्थिरता, सामाजिक प्रतिष्ठा, शिक्षा, रोजगार और सांस्कृतिक उन्नति की आकांक्षा रखता है, किंतु अनेक परिस्थितियों में आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक दबाव और भावनात्मक असंतोष से भी घिरा रहता है। मध्यवर्ग की विशेषता यह है कि वह एक ओर सामाजिक प्रतिष्ठा और परंपरागत मूल्यों से जुड़ा रहता है, तो दूसरी ओर आधुनिकता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और नए जीवन-मूल्यों को अपनाने की इच्छा भी रखता है।

इस दोहरी स्थिति से मध्यवर्गीय व्यक्ति के भीतर अनेक अंतर्विरोध उत्पन्न होते हैं। वह स्वतंत्र होना चाहता है, लेकिन परिवार और समाज की स्वीकृति भी चाहता है। वह प्रेम में आत्मीयता की अपेक्षा करता है, लेकिन अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भी सुरक्षित रखना चाहता है। वह जीवन में स्थायित्व की आकांक्षा करता है, लेकिन आधुनिक जीवन की बदलती परिस्थितियाँ उसे अनिश्चितता की ओर धकेलती हैं। इस प्रकार मध्यवर्गीय संवेदना का मूल आधार आकांक्षा और उपलब्धि के बीच की दूरी, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं का संघर्ष तथा आत्मीयता और अलगाव का द्वंद्व है।

साहित्य में मध्यवर्गीय संवेदना का अर्थ केवल मध्यम आय वाले पात्रों का चित्रण नहीं है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की मानसिक स्थिति, जीवन-मूल्य, सामाजिक संबंध, सांस्कृतिक दृष्टिकोण, आकांक्षाएँ, असफलताएँ और भावनात्मक अनुभव भी सम्मिलित होते हैं। निर्मल वर्मा की कहानियों में यह संवेदना विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक और अस्तित्ववादी रूप ग्रहण करती है।

उनके पात्र प्राय: जीवन की किसी बड़ी सामाजिक घटना के बजाय छोटी-छोटी परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। किसी व्यक्ति का मौन, किसी संबंध में आई दूरी, बीते समय की स्मृति, किसी परिचित स्थान का बदल जाना या किसी आत्मीय व्यक्ति का अनुपस्थित होना उनके भीतर गहरी हलचल उत्पन्न कर सकता है। इस प्रकार निर्मल वर्मा मध्यवर्गीय संवेदना को बाहरी परिस्थितियों से आंतरिक अनुभूति की ओर ले जाते हैं।

मध्यवर्गीय संवेदना के प्रमुख तत्त्व- निर्मल वर्मा की कहानियों के अध्ययन से मध्यवर्गीय संवेदना के निम्नलिखित पक्ष सामने आते हैं-

1. **भावनात्मक अकेलापन:** लोगों के बीच रहते हुए भी आत्मीय संबंधों का अभाव अनुभव करना।
2. **संबंधों की अनिश्चितता:** प्रेम, विवाह और पारिवारिक जीवन में स्थिरता की कमी।
3. **अस्तित्वगत असुरक्षा:** अपने जीवन, पहचान और भविष्य के अर्थ को लेकर संशय।
4. **स्मृति और अतीत-बोध:** वर्तमान के अनुभवों का बीते हुए समय और अधूरे संबंधों से प्रभावित होना।
5. **आधुनिकता का द्वंद्व:** स्वतंत्रता की इच्छा तथा भावनात्मक सुरक्षा की आवश्यकता के बीच संघर्ष।
6. **मौन और संप्रेषणहीनता:** व्यक्ति का अपने अनुभवों को पूरी तरह व्यक्त न कर पाना।
7. **नगरीय जीवन की संवेदनात्मक रिक्तता:** आधुनिक परिवेश में मानवीय संबंधों का औपचारिक या अस्थिर हो जाना।

इन सभी तत्त्वों का परस्पर संबंध है। अकेलापन संबंधों की असफलता से पैदा हो सकता है, जबकि संप्रेषणहीनता उसी अकेलेपन को और गहरा कर सकती है। इसी प्रकार स्मृति वर्तमान की रिक्तता को तीव्र बनाती है और व्यक्ति को अपने अतीत तथा वर्तमान के बीच झूलने के लिए विवश करती है।

नई कहानी आंदोलन और निर्मल वर्मा का साहित्यिक योगदान- स्वतंत्रता के बाद हिंदी कहानी में विकसित नई कहानी आंदोलन ने मनुष्य के व्यक्तिगत अनुभवों और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को प्रमुखता प्रदान की। इस आंदोलन के रचनाकारों ने बदलते सामाजिक ढाँचे के बीच व्यक्ति की स्थिति, मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं, पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन और मानसिक तनावों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया।

निर्मल वर्मा का पहला कहानी-संग्रह परिंदे 1958 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह को हिंदी कहानी की संवेदनात्मक और शिल्पगत यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव माना गया है। संग्रह की भाषा, पात्रों के आंतरिक जीवन और अस्तित्वगत प्रश्नों की अभिव्यक्ति ने कहानी को नए प्रकार की सूक्ष्मता प्रदान की। संग्रह के संबंध में उपलब्ध पुस्तक-परिचय में भी मनुष्य की ऐतिहासिक स्थिति, स्वतंत्रता और आंतरिक मुक्ति की आकांक्षा को इसके महत्त्वपूर्ण पक्षों के रूप में रेखांकित किया गया है।

निर्मल वर्मा की विशेषता यह है कि वे मध्यवर्गीय जीवन को किसी एक सामाजिक सिद्धांत में बाँधकर प्रस्तुत नहीं करते। उनके पात्रों की समस्याएँ केवल आर्थिक अभाव से उत्पन्न नहीं होतीं। कई बार वे ऐसे परिवेश में रहते हैं जहाँ जीवन की भौतिक आवश्यकताएँ पूरी होती दिखाई देती हैं, फिर भी उनके भीतर असंतोष, अनिश्चितता और भावनात्मक खालीपन बना रहता है।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि निर्मल वर्मा की कहानियों को सामाजिक यथार्थ से अलग करके नहीं देखा जा सकता। उनका यथार्थ प्रत्यक्ष

सामाजिक संघर्ष की अपेक्षा उन मानसिक प्रभावों में व्यक्त होता है जो सामाजिक परिवर्तन व्यक्ति के जीवन में उत्पन्न करते हैं। वे दिखाते हैं कि आधुनिकता केवल जीवन-शैली में परिवर्तन नहीं लाती, बल्कि व्यक्ति की आत्मीयता, संबंधों और स्वयं को समझने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है।नई कहानी की इसी संवेदनात्मक भूमि पर निर्मल वर्मा की रचनाएँ मध्यवर्गीय मनुष्य के भीतर छिपे उन अनुभवों को व्यक्त करती हैं जिन्हें सामान्य सामाजिक भाषा में व्यक्त करना कठिन होता है।

परिंदेय कहानी में मध्यवर्गीय संवेदना- निर्मल वर्मा की प्रसिद्ध कहानी परिंदे मध्यवर्गीय संवेदना के अध्ययन के लिए विशेष महत्त्व रखती है। कहानी का शीर्षक ही एक व्यापक प्रतीकात्मक अर्थ की ओर संकेत करता है। परिंदे सामान्यत: गति, स्वतंत्रता, यात्रा और खुले आकाश में विचरण की आकांक्षा के प्रतीक माने जा सकते हैं। किंतु साहित्यिक संदर्भ में उड़ान की आकांक्षा और वास्तविक मुक्ति के बीच का अंतर भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

कहानी में पात्रों की मानसिक स्थितियों और उनके पारस्परिक संबंधों को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी इच्छाओं के बावजूद किन परिस्थितियों में बँधा हुआ अनुभव करता है। आधुनिक मध्यवर्ग का मनुष्य सामाजिक परंपराओं से मुक्त होना चाहता है, लेकिन अतीत की स्मृतियों, भावनात्मक दायित्वों और निजी असुरक्षाओं से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाता। वह अपने जीवन में नए संबंधों और संभावनाओं की तलाश करता है, किंतु पुराने अनुभव उसकी चेतना में बने रहते हैं।

इस कहानी में मध्यवर्गीय संवेदना का महत्त्वपूर्ण पक्ष स्वतंत्रता और भावनात्मक बंधन का द्वंद्व है। स्वतंत्रता केवल बाहरी आवागमन या सामाजिक बंधनों से छुटकारा नहीं हैय वह व्यक्ति की आंतरिक स्थिति से भी संबंधित है। यदि मनुष्य अपने अतीत, भय और अनिश्चितताओं से मुक्त नहीं हो पाता, तो बाहरी स्वतंत्रता के बावजूद उसके भीतर एक प्रकार का बंधन बना रह सकता है।कहानी के प्रतीकात्मक शीर्षक को इस दृष्टि से पढ़ने पर मध्यवर्गीय जीवन की एक गहरी विडंबना सामने आती है। व्यक्ति के सामने संभावनाएँ दिखाई देती हैं, लेकिन वह उन्हें पूर्ण रूप से आत्मसात नहीं कर पाता। उसकी आकांक्षाएँ और वास्तविक अनुभव परस्पर टकराते हैं। यही टकराव उसकी संवेदना को जटिल बनाता है।

कहानी की कलात्मकता इस बात में है कि लेखक मानसिक संघर्षों को केवल व्याख्यात्मक वक्तव्यों के माध्यम से व्यक्त नहीं करते। वातावरण, संकेत, पात्रों की प्रतिक्रियाएँ और कथानक की सूक्ष्म गतियाँ पाठक को पात्रों के आंतरिक संसार तक पहुँचाती हैं। इस प्रकार परिंदे मध्यवर्गीय व्यक्ति की मुक्ति-कामना, अकेलेपन और संबंधों की अनिश्चितता को समझने का महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती है।

'लंदन की एक रात' में आधुनिक नगरीय जीवन और मध्यवर्गीय चेतना निर्मल वर्मा की लंदन की एक रात में आधुनिक महानगरीय परिवेश को समझने का अवसर मिलता है। महानगर आधुनिक जीवन में स्वतंत्रता, विविधता और नए अनुभवों की संभावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन वही परिवेश व्यक्ति के अकेलेपन को भी गहरा कर सकता है। भीड़-भाड़ वाले नगर में अनेक लोगों से संपर्क होने के बावजूद स्थायी आत्मीय संबंधों का अभाव व्यक्ति को भीतर से रिक्त बना सकता है।

इस संदर्भ में महानगरीय जीवन की संवेदना दो विपरीत स्थितियों के बीच निर्मित होती है। एक ओर व्यक्ति परंपरागत सामाजिक नियंत्रणों से अपेक्षाकृत मुक्त होता है, दूसरी ओर उसे अपने जीवन और संबंधों के अर्थ स्वयं निर्धारित करने पड़ते हैं। यह स्वतंत्रता जहाँ संभावनाएँ उत्पन्न करती है, वहीं निर्णय की जिम्मेदारी और अनिश्चितता का भार भी बढ़ाती है।निर्मल वर्मा की कथा-दृष्टि में नगरीय परिवेश केवल घटनाओं का स्थान नहीं है। वह पात्रों की मानसिक अवस्था के साथ संवाद करता है। नगर की अपरिचितता, रात का वातावरण, लोगों के बीच दूरी और क्षणिक संपर्क आधुनिक जीवन की ऐसी परिस्थितियों की ओर संकेत करते हैं जिनमें व्यक्ति का निजी संसार बाहरी दुनिया से अलग होता जाता है।

मध्यवर्गीय व्यक्ति सामाजिक प्रतिष्ठा और आधुनिक जीवन के अवसरों से जुड़ना चाहता है, लेकिन उसे कई बार यह अनुभव होता है कि बाहरी उपलब्धियाँ उसके भीतर की रिक्तता को समाप्त नहीं कर सकतीं। आधुनिक नगर में रहने का अर्थ अपने आप आधुनिक चेतना प्राप्त कर लेना नहीं है। वास्तविक प्रश्न यह है कि व्यक्ति बदलती दुनिया में अपनी पहचान और संबंधों को किस प्रकार बनाए रखता है।इस कहानी के संदर्भ में मध्यवर्गीय संवेदना का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष अजनबीपन और आत्मीयता की तलाश है। व्यक्ति दूसरों के निकट आना चाहता है, लेकिन उसके अनुभव, संकोच और निजी सीमाएँ निकटता को जटिल बना देती हैं। इस प्रकार आधुनिक नगरीय जीवन की भौतिक निकटता के भीतर भावनात्मक दूरी की संभावना उपस्थित रहती है।

'डेढ़ इंच ऊपर' में अनुभव, स्मृति और आंतरिक संसार- निर्मल वर्मा की कहानी डेढ़ इंच ऊपर में शीर्षक तथा कथात्मक संकेतों के माध्यम से अनुभव की सूक्ष्मता और मानवीय स्थिति की बहुस्तरीयता पर विचार किया जा सकता है। कहानी का विश्लेषण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि निर्मल वर्मा के यहाँ किसी सामान्य अनुभव का अर्थ केवल उसकी बाहरी घटना में सीमित नहीं रहता। उस घटना से जुड़ी स्मृतियाँ, व्यक्ति की प्रतिक्रियाएँ और उसके मन में बनने वाले अर्थ भी महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं।

मध्यवर्गीय व्यक्ति का जीवन अक्सर सामाजिक व्यवहार, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और भावनात्मक दायित्वों के बीच विभाजित रहता है। वह दूसरों के सामने एक सामान्य और व्यवस्थित जीवन जीता हुआ दिखाई दे सकता है, जबकि उसके भीतर कई अनसुलझे प्रश्न उपस्थित रहते हैं। इस बाहरी और भीतरी जीवन के अंतर को समझना निर्मल वर्मा की कथा-दृष्टि की एक उपयोगी आलोचनात्मक कुंजी है।

उनकी कहानियों में छोटी-सी घटना भी व्यक्ति के आत्मबोध को प्रभावित कर सकती है। किसी स्मृति का लौटना, किसी परिचित संबंध का बदल जाना अथवा अपने जीवन को किसी नए दृष्टिकोण से देखने की स्थिति व्यक्ति को अपनी वास्तविक मानसिक अवस्था से परिचित करा सकती है। ऐसी स्थितियों में अनुभव का महत्त्व उसके आकार से नहीं, बल्कि उसके आंतरिक प्रभाव से निर्धारित होता है।

इस प्रकार डेढ़ इंच ऊपर का अध्ययन मध्यवर्गीय जीवन की उन सूक्ष्म मन:स्थितियों को समझने की दिशा प्रदान करता है जिनमें सामान्य जीवन की सतह के नीचे जटिल भावनाएँ सक्रिय रहती हैं। यहाँ विशेष सावधानी यह है कि कहानी के शीर्षक से जुड़े प्रतीकात्मक अर्थ को मूल पाठ के प्रसंगों के साथ मिलाकर ही अंतिम रूप दिया जाना चाहिए।

मध्यवर्गीय संवेदना और आधुनिकता का अंतर्द्वंद्व- निर्मल वर्मा की कहानियों में आधुनिकता को केवल पश्चिमी जीवन-शैली, नगरीकरण अथवा भौतिक विकास के रूप में नहीं देखा जा सकता। आधुनिकता व्यक्ति के सोचने, अनुभव करने और संबंधों को समझने के तरीकों में भी परिवर्तन

लाती है। व्यक्ति परंपरागत सामाजिक संरचनाओं से स्वतंत्र होकर अपने जीवन का निर्णय लेना चाहता है, लेकिन इस स्वतंत्रता के साथ उत्पन्न अनिश्चितता का सामना करना भी उसके लिए आवश्यक हो जाता है।

मध्यवर्गीय व्यक्ति की स्थिति विशेष रूप से जटिल है, क्योंकि वह एक साथ अनेक प्रकार की अपेक्षाओं से घिरा रहता है। वह आर्थिक उन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और भावनात्मक संतोष की आकांक्षा करता है। किंतु इन सभी लक्ष्यों को एक साथ प्राप्त करना हमेशा संभव नहीं होता। परिणामस्वरूप उसके जीवन में असंतोष और अंतर्द्वंद्व उत्पन्न होते हैं।

निर्मल वर्मा के पात्रों का संकट इसी अंतर्विरोध से जुड़ा हुआ है। वे केवल समाज द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों से संघर्ष नहीं करते, बल्कि अपने भीतर उपस्थित भय, संकोच और अनिश्चितताओं से भी जूझते हैं। इस कारण उनके पात्रों का संघर्ष कई बार बाहरी रूप से दिखाई नहीं देता। वह उनके विचारों, स्मृतियों, संबंधों और निर्णयों में व्यक्त होता है।

यहाँ एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आधुनिकता के प्रभाव को केवल नकारात्मक रूप में देखना उचित नहीं होगा। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्मचेतना और परंपरागत बंधनों पर प्रश्न उठाने की क्षमता आधुनिक जीवन की सकारात्मक उपलब्धियाँ भी हैं। समस्या तब उत्पन्न होती है जब स्वतंत्रता के साथ आत्मीयता और उत्तारदायित्व का संतुलन स्थापित नहीं हो पाता।इस प्रकार निर्मल वर्मा की कहानियाँ आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की उपलब्धियों और विडंबनाओं, दोनों को समझने का अवसर प्रदान करती हैं।

आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य में निर्मल वर्मा की मध्यवर्गीय दृष्टि– निर्मल वर्मा के साहित्य का मूल्यांकन करते समय यह प्रश्न उठता है कि उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को किस प्रकार प्रस्तुत करती हैं। यदि सामाजिक यथार्थ को केवल आर्थिक शोषण, वर्ग–संघर्ष या राजनीतिक संघर्ष के प्रत्यक्ष चित्रण तक सीमित रखा जाए, तो उनके कथा–साहित्य का एक बड़ा पक्ष अनदेखा रह सकता है। इसके विपरीत, यदि उनकी कहानियों को केवल व्यक्तिगत मन:स्थितियों का साहित्य मान लिया जाए, तो उन सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की उपेक्षा होगी जो इन मन:स्थितियों को निर्मित करती हैं।उनकी कथा–दृष्टि का महत्त्व इन दोनों स्तरों के अंतर्संबंध में निहित है। सामाजिक परिवर्तन व्यक्ति के संबंधों और मानसिकता को प्रभावित करता है, जबकि व्यक्ति की प्रतिक्रिया सामाजिक परिवर्तन के अनुभव को विशिष्ट रूप देती है। निर्मल वर्मा इस पारस्परिक संबंध को सूक्ष्मता से अभिव्यक्त करते हैं।

नामवर सिंह द्वारा परिंदे को नई कहानी की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण रचना के रूप में देखा जाना इस संग्रह के साहित्यिक महत्त्व की ओर संकेत करता है। उपलब्ध पुस्तक–परिचय में भी नामवर सिंह की इस आलोचनात्मक मान्यता का उल्लेख मिलता है। हालांकि किसी आलोचक के मत का उपयोग शोध–पत्र में करते समय उसके मूल आलोचनात्मक ग्रंथ और संबंधित संस्करण का संदर्भ देना चाहिएय इसलिए यहाँ उस मत का उल्लेख प्रत्यक्ष उद्धरण के बजाय आलोचनात्मक संदर्भ के रूप में किया गया है।

निर्मल वर्मा की मध्यवर्गीय दृष्टि की एक विशेषता यह भी है कि वे पात्रों को एक निश्चित नैतिक निष्कर्ष में बंद नहीं करते। उनके पात्रों की कमजोरियाँ, इच्छाएँ, संकोच और विरोधाभास उन्हें मानवीय बनाते हैं। पाठक को उनके व्यवहार का मूल्यांकन करने के साथ–साथ उनकी मानसिक परिस्थितियों को समझने का अवसर भी मिलता है।

फिर भी उनकी कहानियों के मूल्यांकन में यह प्रश्न प्रासंगिक बना रहता है कि व्यक्तिगत अकेलेपन और मानसिक संघर्षों को व्यक्त करते समय वर्गीय विषमता, आर्थिक परिस्थितियों और व्यापक सामाजिक संरचनाओं को कितना स्थान मिलता है। यह आलोचनात्मक प्रश्न उनके साहित्य को अधिक व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में पढ़ने की संभावना खोलता है।

वर्तमान संदर्भ में निर्मल वर्मा की मध्यवर्गीय संवेदना की प्रासंगिकता– वर्तमान समाज में तकनीकी विकास, सोशल मीडिया, नगरीकरण, रोजगार की अनिश्चितता और बदलती पारिवारिक संरचनाओं ने मध्यवर्गीय जीवन को नए रूप में प्रभावित किया है। संपर्क के साधन बढ़े हैं, लेकिन भावनात्मक संवाद की गुणवत्ता हमेशा उसी अनुपात में नहीं बढ़ी है। व्यक्ति अनेक लोगों से जुड़ा हुआ दिखाई देता है, फिर भी वह अपने अनुभवों को साझा करने के लिए किसी आत्मीय व्यक्ति की तलाश कर सकता है।

निर्मल वर्मा की कहानियों में व्यक्त अकेलेपन और संप्रेषणहीनता की समस्याएँ इस संदर्भ में नए अर्थ ग्रहण करती हैं। उनका साहित्य वर्तमान जीवन का प्रत्यक्ष सामाजिक सर्वेक्षण नहीं है, किंतु वह उन मानसिक स्थितियों को समझने में सहायक है जो आधुनिक जीवन की अनेक परिस्थितियों में दिखाई दे सकती हैं।

इसी प्रकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संबंधों के बीच संतुलन का प्रश्न आज भी महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति अपनी पहचान और इच्छाओं को सुरक्षित रखना चाहता है, लेकिन उसे आत्मीय संबंधों की आवश्यकता भी होती है। जब इन दोनों आवश्यकताओं के बीच संतुलन नहीं बन पाता, तब संबंधों में दूरी और अकेलापन उत्पन्न हो सकता है।

निर्मल वर्मा की कहानियाँ पाठक को इन प्रश्नों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। वे किसी समस्या का सरल समाधान प्रस्तुत करने के बजाय उसकी जटिलता को समझने का अवसर देती हैं। यही उनकी संवेदनात्मक प्रासंगिकता है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निर्मल वर्मा की कहानियों में मध्यवर्गीय संवेदना बहुआयामी रूप में अभिव्यक्त हुई है। उनके कथा–साहित्य में मध्यवर्ग केवल आर्थिक और सामाजिक स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि आधुनिक जीवन के अंतर्विरोधों से जूझते हुए व्यक्ति की मानसिक अवस्था का भी प्रतिनिधित्व करता है।

उनकी कहानियों में अकेलापन, स्मृति, भावनात्मक असुरक्षा, संबंधों का विघटन, स्वतंत्रता की आकांक्षा और अस्तित्वगत अनिश्चितता जैसे विषय मध्यवर्गीय जीवन की जटिलता को उजागर करते हैं। परिंदे में मुक्ति और भावनात्मक बंधन का द्वंद्व, लंदन की एक रात के संदर्भ में नगरीय अजनबीपन, पिछली गर्मियों में में स्मृति और अतीत–बोध तथा जलती झाड़ी में मानसिक तनाव और संवेदनात्मक अंतर्विरोध जैसे पक्ष इस अध्ययन को व्यापक आधार प्रदान करते हैं। इन कहानियों के विशिष्ट प्रसंगों का मूल पाठ के आधार पर विस्तृत परीक्षण आगे के शोध में इन निष्कर्षों को अधिक सटीक बना सकता है। निर्मल वर्मा की साहित्यिक उपलब्धि इस बात में निहित है कि वे सामान्य जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं में छिपे गहरे मानसिक अर्थों को पहचानते हैं। उनके पात्रों का जीवन बाहर से साधारण दिखाई दे सकता है, किंतु उनके भीतर भावनाओं, स्मृतियों, इच्छाओं और आशंकाओं का जटिल संसार सक्रिय रहता है। इस आंतरिक संसार की अभिव्यक्ति के लिए लेखक मौन, प्रतीक, वातावरण और स्मृति जैसी कथात्मक युक्तियों का प्रयोग करते हैं।

उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय व्यक्ति की त्रासदी केवल यह नहीं है कि वह अपनी सभी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाता, बल्कि यह भी है कि कई बार वह अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को पूरी तरह पहचान नहीं पाता। वह आत्मीयता चाहता है, लेकिन निकटता से भयभीत भी हो सकता हैय स्वतंत्रता चाहता है, लेकिन स्थिरता की आवश्यकता भी अनुभव करता हैय अतीत को छोड़ना चाहता है, लेकिन उसी अतीत में अपनी पहचान के सूत्र खोजता है।

इस प्रकार निर्मल वर्मा की कहानियाँ आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की संवेदनात्मक विडंबनाओं का महत्त्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज हैं। उनका कथा–साहित्य सामाजिक यथार्थ और मनोवैज्ञानिक अनुभव के बीच एक सार्थक संबंध स्थापित करता है। यही कारण है कि मध्यवर्गीय संवेदना, आधुनिकता, अकेलेपन और मानवीय संबंधों के अध्ययन में निर्मल वर्मा की कहानियाँ आज भी आलोचनात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. वर्मा, निर्मल। परिंदे, वाणी प्रकाशन, 2022.
2. वर्मा, निर्मल। प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990.
3. वर्मा, निर्मल, जलती झाड़ी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010.
4. वर्मा, निर्मल, पिछली गर्मियों में, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010.
5. सिंह, नामवर, कहानी : नई कहानी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. मिश्र, देवीशंकरअवस्थी, संपादक। नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति।
7. राय, गोपाल, हिंदी कहानी का इतिहास।
8. वर्मा, निर्मल, शब्द और स्मृति राजकमल प्रकाशन।
9. Freud, Sigmund. The Interpretation of Dreams. Translated by James Strachey, Basic Books, 2010 edition.
10. Fromm, Erich. The Art of Loving. Harper Perennial Modern Classics, 2006 edition.

****